अध्याय - 1
आर्थिक विकास और नियोजन

हम पढ़ेंगे

15.1 विकास की अवधारणा
15.2 राष्ट्रीय आय एवं प्रति व्यक्ति आय
15.3 विकास के संकेतक
15.4 विकसित एवं विकासशील राज्य
15.5 आर्थिक नियोजन
15.6 भारत में नियोजन की सफलताएँ एवं असफलताएँ
15.7 इंडिया विजन 2020

आधुनिक युग में सभी व्यक्ति चाहते हैं कि उन्हें रहने के लिये मकान, खाने के लिये भोजन, पहनने के लिये कपड़े तथा बच्चों के लिये शिक्षा एवं स्वास्थ्य सुविधाएँ प्राप्त हों। किन्तु, यह तभी सम्भव है जब वस्तुओं का उत्पादन हो और उन्हें रोजगार मिले जिससे कि पर्याप्त आय प्राप्त हो और उनकी आवश्यकताएँ पूरी हों। अर्थशास्त्र में इसी प्रक्रिया को आर्थिक विकास की संज्ञा दी जाती है।

इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि - आर्थिक विकास एक ऐसी अनवरत प्रक्रिया है जिसके परिणामस्वरूप देश के समस्त उत्पादन साधनों का कुशलतापूर्वक प्रयोग होता है। इसमें राष्ट्रीय आय और प्रतिव्यक्ति आय में निरंतर एवं दीर्घकालीन वृद्धि होती है, आर्थिक विकास के सम्बन्ध में प्राचीन एवं नवीन अर्थशास्त्रियों के मत निम्नानुसार हैं-

15.1 विकास की अवधारणा

प्राचीन काल में भारत को 'सोने की चिड़िया' कहा जाता था। इसका अर्थ यह है कि उस समय भारत एक सम्पन्न एवं विकसित देश था और उसकी अर्थव्यवस्था सुदृढ़ थी। सादा जीवन, कठोर मेहनत, परस्पर भाई-चारा आदि यहाँ की अर्थव्यवस्था का मुख्य आधार था। उपजाऊ भूमि से पर्याप्त मात्रा में अन्न का उत्पादन होता था तथा कुटीर एवं ग्रामीण उद्योगों से यहाँ के निवासियों का जीवनयापन सरलता से होता था। व्यापार भी बड़े पैमाने पर होता था, जिससे व्यक्तियों के साथ-साथ ग्राम एवं राज्य भी खुशहाल एवं संपन्न थे। प्राचीन काल में आर्थिक विकास के अन्तर्गत भौतिक सुख-सुविधाओं के साथ-साथ मानव मूल्यों को भी महत्वपूर्ण स्थान दिया गया था। महान अर्थशास्त्री कौटिल्य ने अपनी पुस्तक 'अर्थशास्त्र' में इन विचारों की विस्तार से व्याख्या की है। भारत के प्राचीनतम ग्रंथ वेदों में इन सभी की समृद्धि और बाहुल्यता की धारणा बताई गई है।

प्राचीन काल में वैश्विक स्तर पर आर्थिक विकास के अन्तर्गत भौतिक सम्पन्नता को विशेष स्थान प्राप्त था। जर्मनी एवं फ्रांस के 'वणिकवादी विचारक' सोने एवं चाँदी की प्राप्ति को विकास का आधार मानते थे। समय के साथ-साथ विकास की अवधारणा भी बदलती रही। प्राचीन अर्थशास्त्री एडम स्मिथ का विचार था कि किसी देश में वस्तुओं तथा सेवाओं की वृद्धि ही आर्थिक विकास है। कार्ल मार्क्स ने समाजवाद की स्थापना को आर्थिक विकास माना है। परन्तु इन सबसे भिन्न जे.एस.मिल ने लोक कल्याण व आर्थिक विकास के लिये सहकारिता के सिद्धान्त को अपनाने को आर्थिक विकास माना।

नवीन अर्थशास्त्रियों में पॉल एलबर्ट देश के उत्पादन के साधनों के कुशलतम प्रयोग द्वारा राष्ट्रीय आय में वृद्धि को आर्थिक विकास मानते है। जबकि विलियमसन और वदिक का विचार है कि देश के निवासियों की प्रति व्यक्ति आय में वृद्धि आर्थिक विकास है। इनसे भिन्न डी. ब्राइट सिंह का विचार है कि यदि आय में वृद्धि के साथ-साथ समाज कल्याण में भी वृद्धि होती है तो वह आर्थिक विकास है। नोबल पुरस्कार से सम्मानित प्रो. अमर्त्य सेन ने भी आर्थिक कल्याण को विशेष महत्व दिया है।

आर्थिक विकास को परिभाषित करते हुए 'मेयर एवं बॉल्डविन' ने लिखा है, ''आर्थिक विकास एक ऐसी प्रक्रिया है जिसमें दीर्घकाल में अर्थव्यवस्था की वास्तविक राष्ट्रीय आय में वृद्धि होती है।'' आर्थिक विकास को सरलता से समझने के लिये उसके लक्षणों की जानकारी आवश्यक है।

विकास के प्रमुख लक्षण निम्नानुसार हैं –

1. **सतत प्रक्रिया** – आर्थिक विकास एक सतत एवम् निरन्तर चलने वाली प्रक्रिया है। जिसके परिणामस्वरूप राष्ट्रीय आय में क्रमशः वृद्धि होती रहती है। इस प्रक्रिया के परिणामस्वरुप अर्थ–व्यवस्था में वस्तुओं की माँग और पूर्ति में निरन्तरता बनी रहती है।

2. **राष्ट्रीय आय एवं प्रति व्यक्ति आय में वृद्धि** – आर्थिक विकास के परिणामस्वरुप राष्ट्रीय आय व प्रतिव्यक्ति आय में निरन्तर वृद्धि होती है।

3. **दीर्घकालीन प्रक्रिया** – आर्थिक विकास एक दीर्घकालीन प्रक्रिया है क्योंकि अल्पकालीन या कम समय के लिये होने वाली वृद्धि या परिवर्तन को विकास नहीं कहा जा सकता है। उदाहरणार्थ – यदि किसी वर्ष अच्छी वर्षा हो जाती है तो कृषि उत्पादन भी बढ़ जाता है जिससे राष्ट्रीय आय भी बढ़ जाती है, परन्तु उसे आर्थिक विकास नहीं कहा जा सकता।

4. **संसाधनों का समुचित विदोहन** – आर्थिक विकास में देश में उपलब्ध समस्त संसाधनों का कुशलतापूर्वक विदोहन किया जाता है।

5. **जीवन स्तर एवं समाज कल्याण में उन्नति** – आर्थिक विकास के दौरान प्रति व्यक्ति आय में वृद्धि के फलस्वरूप जन साधारण के जीवन स्तर में सुधार आता है। आर्थिक विषमता में कमी आती है तथा सरकार द्वारा शिक्षा, सार्वजनिक स्वास्थ्य आदि जन कल्याण कार्यक्रमों में वृद्धि की जाती है। इससे लोगों के रहन–सहन का स्तर ऊँचा उठता है। आर्थिक विकास के परिणामस्वरुप देश की आय एवं उसमें रहने वाले लोगों की आमदनी में वृद्धि होती है जिसे हम राष्ट्रीय आय एवं प्रतिव्यक्ति आय के रूप में जानते हैं।

15.2 राष्ट्रीय एवं प्रतिव्यक्ति आय

राष्ट्रीय आय – किसी भी देश या राष्ट्र की कुल आय राष्ट्रीय आय कहलाती है। इसे देश में एक वर्ष में उत्पादित वस्तुओं तथा सेवाओं के मौद्रिक मूल्य को जोड़कर ज्ञात किया जाता है। **मार्शल** ने राष्ट्रीय आय को परिभाषित करते हुए लिखा है, ''देश का श्रम एवं पूंजी उसके प्राकृतिक साधनों पर क्रियाशील होकर प्रति वर्ष भौतिक एवं अभौतिक वस्तुओं के शुद्ध योग, जिसमें सभी प्रकार की सेवाएँ सम्मिलित होती हैं, का उत्पादन करते हैं। यही देश की वास्तविक शुद्ध आय या राष्ट्रीय लाभांश कहलाता है।''

राष्ट्रीय आय के सम्बन्ध में निम्नलिखित बातें महत्वपूर्ण हैं –

1. राष्ट्रीय आय का सम्बन्ध एक वर्ष की अवधि जिसे एक वित्त वर्ष कहा जाता है, से है। (भारत में 1 अप्रैल से 31 मार्च)इस अवधि में उत्पादित समस्त वस्तुओं एवं सेवाओं मौद्रिक मूल्य से है।
2. राष्ट्रीय आय में सभी प्रकार की वस्तुओं और सेवाओं की बाजार कीमतें सम्मिलित की जाती हैं, इसमें एक वस्तु की कीमत को एक ही बार गिना जाता है।
3. इसमें विदेशों से प्राप्त आय को जोड़ा जाता है तथा विदेशियों द्वारा देश से प्राप्त आय को घटाया जाता है।

प्रतिव्यक्ति आय – किसी देश की राष्ट्रीय आय को जब उस देश की कुल जनसंख्या से भाग दे दिया तो हमें प्रतिव्यक्ति आय प्राप्त हो जाती है। इसे ज्ञात करने के लिए निम्नलिखित सूत्र का प्रयोग किया जाता है–

$$\text{प्रतिव्यक्ति आय} = \frac{\text{राष्ट्रीय आय}}{\text{देश की कुल जनसंख्या}}$$

प्रतिव्यक्ति आय हमें उस देश के निवासियों के जीवन स्तर की जानकारी प्रदान करती है। यदि किसी देश में प्रतिव्यक्ति आय में बढ़ोत्तरी हो रही है तो इसका तात्पर्य है कि उस देश के निवासियों के जीवन स्तर में वृद्धि हो रही है, अर्थात उनके जीवन स्तर में सुधार हो रहा है।

15.3 विकास के संकेतक

विभिन्न देशों के मध्य विकास के स्तर की तुलना के लिये कुल राष्ट्रीय आय को एक माप के रूप में काफी समय से स्वीकार किया जाता है। इस मापदण्ड के अनुसार जिन देशों की आय अधिक है उन्हें कम आय वाले देशों से अधिक विकसित समझा जाता है कारण यह है कि अधिक आय होने के कारण इन देशों के निवासी अधिक वस्तुओं का उपयोग करते हैं। किन्तु राष्ट्रीय आय विभिन्न देशों के मध्य तुलना करने के लिये उपयुक्त माप नहीं है। कारण यह है कि देशों की जनसंख्या अलग-अलग होती है और विकास के स्तर की माप के लिए जनसंख्या के आकार के महत्व को स्वीकार किया गया। फलतः प्रति व्यक्ति आय के द्वारा विकास के स्तर को मापने का एक अच्छा मापदण्ड माना जाने लगा है, किन्तु समग्र आर्थिक विकास के दृष्टिकोण से यह माना जाता है कि राष्ट्रीय एवं प्रतिव्यक्ति आय विकास के सही मापदण्ड नहीं हैं। कारण यह है कि इसमें केवल औसत आय को ही महत्व दिया जाता है। वास्तविकता यह है कि विकास के अन्तर्गत जनसामान्य को प्राप्त होने वाली स्वास्थ्य, शिक्षा, आवास, पोषक आहार, पेय जल जैसी सुविधाओं की उपलब्धता का भी समावेश होना चाहिये। फलतः आर्थिक विकास को मापने के लिये राष्ट्रीय आय एवं प्रतिव्यक्ति आय के विकल्प के रूप में 'मानव विकास संकेतक' को महत्व दिया गया।

इस दिशा में प्रो. मौरिस (Morris) ने जीवन के भौतिक गुणों के सूचकांक (Physical Quality Of Life Index या PQLI) का विकास किया। इसी प्रकार प्रो. पॉल स्ट्रीटन (Paul Streetan) ने मूल आवश्यकता दृष्टिकोण (Basic Need Approach) को अपनाने पर, जोर दिया। इन विचारों को मूर्त रूप देते हुए सन् 1990 में संयुक्त राष्ट्र ने मानव विकास संकेतक या सूचकांक प्रकाशित किये। इसके बाद आर्थिक विकास के ये संकेतक प्रति वर्ष मानव विकास संकेतक, रिपोर्ट में प्रकाशित किये जा रहे हैं।

मानव विकास संकेतकों में भौतिक एवं अभौतिक दोनों प्रकार के घटकों को सम्मिलित किया गया है। इनमें भौतिक घटक के रूप में सकल घरेलू उत्पाद और अभौतिक घटक के रूप में शिशु मृत्यु दर, जीवन की सम्भाव्यता और शैक्षणिक प्राप्तियाँ आदि को लिया गया है।

मानव विकास के संकेतकों का निर्माण

मानव विकास सूचक के निर्माण में जीवन के तीन आवश्यक मूलभूत घटकों का प्रयोग किया जाता है। ये घटक हैं -

1. एक लम्बे और स्वस्थ जीवन के मापन हेतु जन्म के समय जीवन प्रत्याशा।
2. वयस्क साक्षरता दर तथा कुल नामांकन अनुपात।
3. प्रतिव्यक्ति सकल घरेलू उत्पाद।

मानव विकास सूचक की गणना करने के लिए सबसे पहले उपरोक्त तीनों घटकों के अलग-अलग सूचक तैयार किये जाते है। तदोपरांत उनका औसत ज्ञात करके उनके मूल्य को 0 से 1 के मध्य प्रदर्शित किया जाता है। सबसे अधिक विकसित देश का सूचक एक तथा सबसे अधिक पिछड़े देश का सूचक शून्य के निकट होता है।

इस आधार पर विश्व के सभी देशों को उनके विकास के स्तर के अनुसार निम्नलिखित तीन वर्गों में वर्गीकृत किया जाता है –

1. **उच्च मानवीय विकास वाले देश** – जिन देशों के सूचक का माप 0.8 या इससे अधिक होता है, उन्हें उच्च मानवीय विकास वाले देश माना जाता है।

2. **मध्यम मानवीय विकास वाले देश** – जिन देशों के सूचक का माप 0.5 से 0.8 तक होता है उन्हें मध्यम मानवीय विकास वाले देश कहा जाता है।

3. **निम्न मानवीय विकास वाले देश** – जिन देशों के सूचक का मान 0.5 से कम होता है उन्हें निम्न मानवीय विकास वाले देश माना जाता है।

मानव विकास सूचकांक के संदर्भ में भारत की स्थिति

देश	मानव विकास सूचकांक (2004)	विश्व में स्थान
नार्वे	0.965	1
आस्ट्रेलिया	0.957	3
चीन	0.768	81
श्रीलंका	0.755	93
इंडोनेशिया	0.711	108
भारत	**0.611**	**126**
पाकिस्तान	0.539	134
बांग्लादेश	0.530	137
नेपाल	0.527	138
मोजम्बिक	0.390	168
नाइजर	0.311	177

स्रोत–आर्थिक समीक्षा 2006–07, भारत सरकार, पृष्ठ 205

संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम में चुने हुए 177 देशों के लिए मानव विकास सूचकांक प्रकाशित किए गए हैं। इन सूचकांकों के अनुसार 63 देश उच्च मानव विकास, 83 मध्यम मानव विकास तथा 31 न्यूनतम मानव विकास वाले देश हैं। इन देशों में भारत का स्थान 126 वाँ है। मानव विकास प्रतिवेदन 2006 के अनुसार विश्व के कुछ देशों का मानव विकास संकेतक दी गई तालिका में दर्शाया गया है। इसी आधार पर योजना आयोग ने भारत को विभिन्न राज्यों के मानव विकास सूचकांक बनाए हैं।

15.4 विकसित एवं विकासशील राष्ट्र

विकसित देशों से तात्पर्य उन देशों से है, जहाँ के नागरिक अपनी भोजन, कपड़ा, व मानव की आवश्कताएँ सरलतापूर्वक पूरी कर रहे हैं। इन देशों में निर्धनता व बेरोजगारी नियन्त्रण में है। विकसित देशों में जापान, अमेरिका, इंग्लैण्ड आदि देश आते है। इसके विपरीत संसार में ऐसे देश भी हैं जहाँ नागरिकों को भरपेट भोजन भी प्राप्त नहीं होता, पहनने को सीमित मात्रा में कपड़े मिलते हैं, नागरिकों का जीवन स्तर बहुत निम्न है। इन देशों में व्यापक बेरोजगारी व अशिक्षा पायी जाती है। इन देशों को अल्प विकसित या विकासशील देश कहा जाता है। भारत, पाकिस्तान, बांग्लादेश, श्रीलंका तथा म्यांमार आदि को इस श्रेणी में रखा जाता है। इन अल्पविकसित देशों को निर्धन, पिछड़ा, विकासशील या कम विकसित देश भी कहा जाता है।

कोई देश विकसित है या विकासशील इसे निर्धारित करना एक कठिन कार्य है। परन्तु फिर भी कुछ आधारों पर विकसित एवं विकासशील देशों में अन्तर किया जा सकता हैं। अगले पृष्ठ पर दी गई तालिका में इन आधारों को उल्लेखित किया गया है।

विकसित एवं विकासशील राष्ट्रों के मध्य क्या अन्तर है? इसे संयुक्त राष्ट्र संघ ने इस प्रकार परिभाषित किया है ''विकासशील देश वे हैं जिनकी प्रति व्यक्ति वास्तविक आय संयुक्त राज्य अमेरिका, कनाडा, आस्ट्रेलिया व पश्चिमी यूरोप के देशों की प्रति व्यक्ति वास्तविक आय की तुलना में कम है।''

विश्व बैंक ने भी अपनी विकास रिपोर्ट 2006 में विकसित एवं विकासशील देशों के मध्य अन्तर करने के लिए प्रतिव्यक्ति आय मापदण्ड का प्रयोग किया है। रिपोर्ट के अनुसार वे देश जिनकी वर्ष 2004 में प्रतिव्यक्ति आय 4,53,000 रु. प्रतिवर्ष या उससे अधिक है, उसे विकसित देश तथा वे देश जिनकी प्रतिव्यक्ति आय 37,000

विकसित व विकासशील देश में भिन्नता के आधार		
मापदण्ड	विकसित देश	विकासशील देश
• कृषि	कृषि की प्रधानता नहीं	कृषि की प्रधानता
• प्राकृतिक साधन	पूर्ण उपयोग	अल्प उपयोग
• प्रतिव्यक्ति आय	अधिक	कम
• पूँजी निर्माण	उच्च दर	निम्न दर
• उद्योग	प्रधानता	अभाव/कम
• बेरोजगारी	न्यूनतम	अधिक
• बैंक एवं बीमा	पर्याप्त रुप से विकसित	कम विकसित
• जन्म व मृत्युदर	निम्न दर	तुलनात्मक उच्च दर
• ग्रामीण जनसंख्या	कम	अधिक
• प्रत्याशित आयु	अधिक	तुलनात्मक कम
• तकनीकी शिक्षा	व्यापक रुप में विकसित	पर्याप्त रूप से विकसित न होना
• साक्षरता	पूर्ण साक्षरता	अल्प साक्षरता

रु. प्रति वर्ष या उससे कम है, उन्हें विकासशील (निम्न आय) देश माना गया है। इसमें भारत विकासशील देशों के अन्तर्गत शामिल है।

जिस प्रकार विश्व के विभिन्न देशों में कुछ देश विकसित देश हैं तथा अन्य विकासशील देश हैं। इसी प्रकार एक देश जो विभिन्न राज्यों से मिलकर बना होता है, में कुछ राज्य विकसित राज्य तथा अन्य विकासशील राज्य होते हैं। यदि हम भारत में आर्थिक विकास के प्रतिव्यक्ति आय मापदण्ड के आधार पर देखें तो हमें पता चलता है कि भारत में कुछ राज्य तुलनात्मक रुप से विकसित राज्य हैं तथा कुछ विकासशील एवं पिछड़े राज्य हैं। प्रतिव्यक्ति आय मापदण्ड के आधार पर हम भारत के 15 बड़े राज्यों को दो वर्गों में बाँट सकते हैं यथा विकसित राज्य तथा विकासशील राज्य। विकसित राज्यों की सूची में पंजाब, महाराष्ट्र, हरियाणा, गुजरात, पश्चिम बंगाल, कर्नाटक, केरल, तमिलनाडु और आन्ध्रप्रदेश को सम्मिलित किया जा सकता है। जबकि विकासशील राज्यों की सूची में मध्यप्रदेश, असम, उत्तरप्रदेश, राजस्थान, उड़ीसा और बिहार आदि राज्य हैं। यद्यपि मध्यप्रदेश अब विकसित राज्य बनने की ओर तीव्रता से अग्रसर हो रहा है। इन 15 राज्यों में 2001 की जनगणना के अनुसार देश की कुल आवादी का 90 प्रतिशत हिस्सा निवास करता है। इसमें से 48 प्रतिशत आबादी तुलनात्मक रूप से विकसित राज्यों में निवास करती है और 42 प्रतिशत आबादी विकासशील राज्यों में रहती है। तुलनात्मक रुप से विकसित और विकासशील राज्यों को नीचे दी गई तालिका में दिखाया गया है।

भारत के विकसित एवं विकासशील राज्य

राज्यानुसार प्रतिव्यक्ति निवल घरेलू उत्पाद 2004-2005 (वर्तमान की कीमतों पर)

विकसित राज्य	प्रतिव्यक्ति आय (रु. में)	विकासशील राज्य	प्रतिव्यक्ति आय (रु. में)
हरियाणा	32,712	राजस्थान	16,212
महाराष्ट्र	32,170	उत्तरप्रदेश	14,477
पंजाब	30,701	मध्यप्रदेश	14,069
गुजरात	28,355	असम	13,633
केरल	27,048	उड़ीसा	13,601
तमिलनाडु	25,965	बिहार	5,772
कर्नाटक	23,945	सम्पूर्ण भारत	22,946
आन्ध्रप्रदेश	23,153		
पश्चिम बंगाल	22,497		

स्त्रोत - आर्थिक समीक्षा - 2006-07 भारत सरकार।

तालिका के अध्ययन से ज्ञात होता है कि भारत में तुलनात्मक रुप से विकसित राज्य वे हैं जिनकी प्रतिव्यक्ति आय उस वर्ष की संपूर्ण भारत की प्रतिव्यक्ति आय से अधिक है, जबकि विकासशील एवं पिछड़े राज्य वे हैं, जिनकी प्रतिव्यक्ति आय संपूर्ण भारत की प्रतिव्यक्ति आय की तुलना में कम है। 2004-05 में प्रतिव्यक्ति आय के आधार पर विकसित राज्यों में हरियाणा का स्थान सबसे ऊपर है, जबकि विकासशील राज्यों में सबसे कम प्रतिव्यक्ति आय बिहार राज्य की है।

15.5 आर्थिक नियोजन

आर्थिक नियोजन का आशय एक ऐसी प्रक्रिया से है, जिसमें एक निर्धारित अवधि में सुनिश्चित एवं स्पष्ट लक्ष्यों की प्राप्ति हेतु आर्थिक संसाधनों का उपयोग किया जाता है। इस प्रकार कहा जा सकता है कि आर्थिक नियोजन में दो बातें जरूरी होती हैं, यथा -

1. पूर्व निर्धारित लक्ष्य जिन्हें प्राप्त किया जाना है तथा
2. निर्धारित लक्ष्यों को प्राप्त करने हेतु उपलब्ध साधनों तथा उनके उपयोग करने का ब्यौरा।

आर्थिक नियोजन में सरकार द्वारा यह सुनिश्चित किया जाता है कि किस प्रकार समाज की अधिकतम सन्तुष्टि के लिए देश के संसाधनों का प्रयोग किया जाता है। नियोजन से पूर्व देश के आर्थिक संसाधनों का आंकलन किया जाता है। इसमें घरेलू साधनों के साथ-साथ विदेशों से प्राप्त होने वाले साधनों को भी शामिल किया जाता है। इसके बाद आर्थिक लक्ष्यों का निर्धारण कर, देश में उपलब्ध संसाधनों का श्रेष्ठतम प्रयोग करते हुए लक्ष्यों को प्राप्त करने का प्रयास किया जाता है।

भारत में नियोजन व नियोजन के उद्देश्य

भारत में स्वतंत्रता से पूर्व भी राष्ट्रीय नेताओं एवं विशेषज्ञों ने राष्ट्रीय निर्माण की आवश्यकता पर जोर दिया था। सर्वप्रथम सन् 1934 में सर विश्वेश्वरैया ने भारत के आर्थिक विकास एवं पुनर्निर्माण हेतु 10 वर्षीय योजना प्रस्तुत की। तदुपरान्त सन् 1944 में देश के प्रमुख उद्योगपतियों द्वारा बम्बई योजना तथा श्रीमन्नारायण द्वारा गाँधीवादी योजना प्रस्तुत की गई। किन्तु व्यावहारिक कठिनाइयों के कारण इन्हें मूर्त रूप नहीं दिया जा सका।

स्वतंत्रता के बाद 15 मार्च, 1950 में देश के लिये योजना बनाने के उद्देश्य से योजना आयोग का गठन किया गया। इस आयोग द्वारा अभी तक 12 पंचवर्षीय योजनाओं का प्रारूप बनाया गया तथा भारत सरकार द्वारा इन्हें क्रियान्वित किया गया। वर्तमान में बारहवीं पंचवर्षीय योजना 1 अप्रैल, 20012 से प्रारम्भ हुई है।

भारत में पंचवर्षीय योजनाओं के प्रमुख मार्गदर्शक सिद्धान्त आर्थिक समानता, सामाजिक न्याय, आत्मनिर्भरता, कार्यकुशलता एवं उत्पादकता में सुधार रहा हैं। परिस्थितियों एवं समस्याओं में परिवर्तन के कारण विभिन्न योजनाओं में उक्त मार्गदर्शी सिद्धान्तों में से अलग-अलग योजनाओं में अलग-अलग बातों पर विशेष जोर दिया गया है। संक्षेप में भारतीय योजनाओं के मूल उद्देश्य निम्नलिखित रहे हैं -

1. विकास की ऊँची दर प्राप्त करना;
2. सामाजिक तथा आर्थिक न्याय की प्राप्ति;
3. आत्मनिर्भरता की प्राप्ति;
4. रोजगार के अवसरों में वृद्धि;
5. आर्थिक स्थिरता की प्राप्ति;
6. जीवन स्तर में वृद्धि करना;
7. सामाजिक कल्याण को बढ़ाना और
7. गरीबी उन्मूलन आदि।

भारत में विभिन्न पंचवर्षीय योजनाएँ

भारत में आर्थिक नियोजन के अन्तर्गत अब तक ग्यारह पंचवर्षीय योजनाओं को पूरा किया जा चुका है और बारहवीं योजना प्रगति पर है। इन पंचवर्षीय योजनाओं का विवरण निम्नानुसार है -

भारत में विभिन्न पंचवर्षीय योजनाओं का कार्यकाल

योजना	योजना कार्यकाल
प्रथम योजना	1 अप्रैल, 1951 से 31 मार्च, 1956 तक
द्वितीय योजना	1 अप्रैल, 1956 से 31 मार्च, 1961 तक
तृतीय योजना	1 अप्रैल, 1961 से 31 मार्च, 1966 तक
तीन एक-एक वर्षीय योजनाएं	1 अप्रैल, 1966 से 31 मार्च, 1969 तक
चतुर्थ योजना	1 अप्रैल, 1969 से 31 मार्च, 1974 तक
पांचवी योजना	1 अप्रैल, 1974 से 31 मार्च, 1979 तक
एक वर्ष का अन्तराल	1 अप्रैल, 1979 से 31 मार्च, 1980 तक
छठवीं योजना	1 अप्रैल, 1980 से 31 मार्च, 1985 तक
सातवीं योजना	1 अप्रैल, 1985 से 31 मार्च, 1990 तक
दो एक-एक वर्षीय योजनाएं	1 अप्रैल, 1990 से 31 मार्च, 1992 तक
आठवीं योजना	1 अप्रैल, 1992 से 31 मार्च, 1997 तक
नौवीं योजना	1 अप्रैल, 1997 से 31 मार्च, 2002 तक
दसवीं योजना	1 अप्रैल, 2002 से 31 मार्च, 2007 तक
ग्यारहवीं योजना	1 अप्रैल, 2007 से 31 मार्च, 2012 तक
बारहवीं योजना	1 अप्रैल, 2012 से 31 मार्च, 2017 तक

15.6 भारत में नियोजन की सफलताएं एवं असफलताएं

भारत में आर्थिक नियोजन 1 अप्रैल, 1951 से प्रारम्भ हुआ और अभी तक 10 पंचवर्षीय योजनाएँ पूर्ण हो चुकी हैं। इस अवधि में देश का औद्योगिक ढ़ांचा सुदृढ़ हुआ और कृषि के क्षेत्र में आत्मनिर्भरता प्राप्त हुई। शिक्षा, स्वास्थ्य, एवं अन्य सामाजिक क्षेत्रों में तेजी से विस्तार हुआ। भारत में नियोजन से प्राप्त प्रमुख **सफलताएँ** निम्नलिखित हैं -

1. **राष्ट्रीय एवं प्रतिव्यक्ति आय में वृद्धि -** भारत की राष्ट्रीय आय वर्ष 1950-51 में वर्तमान कीमतों पर केवल 9142 करोड़ रु. थी जो वर्ष 2005-06 में बढ़कर 28,46,762 करोड़ रु. हो गई। इसी प्रकार प्रतिव्यक्ति आय इस अवधि में 255 रु. से बढ़कर 25,716 हो गई। इस प्रकार स्पष्ट है कि नियोजन की अवधि में राष्ट्रीय एवं प्रतिव्यक्ति आय में तेजी से वृद्धि हुई है।

2. **बचत व विनियोग दर में वृद्धि -** आर्थिक विकास हेतु राष्ट्रीय आय के कुछ भाग को विनियोजित किया (उत्पादन कार्य में लगाया) जाता है। इसके लिए प्रत्येक योजना में बचत व विनियोग के ऊँचे लक्ष्य निर्धारित किये गये थे जिन्हें लगभग प्राप्त भी कर लिया गया है। चालू मूल्यों पर 1950-51 में सकल बचत व विनियोग दरें सकल राष्ट्रीय उत्पाद का केवल 8.9 व 8.7 प्रतिशत थीं जो कि बढ़कर 2005-06 में क्रमशः 32.4 व 33.8 प्रतिशत हो गयी।

3. **कृषि क्षेत्र में विकास -** आर्थिक नियोजन के परिणामस्वरुप कृषि उत्पादन में व्यापक वृद्धि हुई है। खाद्यानों का उत्पादन जो 1950-51 में 508 लाख टन था वह बढ़कर 2005-06 में 2083 लाख टन हो गया है। इस काल में हरित क्रान्ति के परिणामस्वरुप उन्नत बीजों, रासायनिक खादों, कीटनाशक दवाओं, सिंचाई सुविधाओं आदि को अपनाया गया। साथ ही कृषि क्षेत्र में आधारित संरचना का भी विकास हुआ है।

4. **औद्योगीकरण -** पंचवर्षीय योजनाओं के माध्यम से देश में औद्योगिक क्षेत्र में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है। आज भारत विश्व का दसवाँ सबसे बड़ा औद्योगिक देश बन गया है। औद्योगीकरण के क्षेत्र में भारत की

प्रगति का अनुमान इस बात से लगाया जा सकता है कि भारत के निर्यात व्यापार में निर्मित वस्तुओं का योगदान क्रमश: बढ़ रहा है। नियोजन के दौरान देश में लौह इस्पात, इंजीनियरिंग, रसायन तथा सीमेन्ट आदि आधारभूत एवं भारी उद्योगों की स्थापना की गई। इस अवधि में सार्वजनिक क्षेत्र की भूमिका महत्वपूर्ण हुई है। सन् 1950-51 में भारत में सार्वजनिक क्षेत्र में केवल 5 उद्योग थे, जिनकी संख्या मार्च 2006 में बढ़कर 242 हो गयी।

5. विद्युत उत्पादन में वृद्धि - नियोजन काल में विद्युत उत्पादन में पर्याप्त वृद्धि हुई। विद्युत उत्पादन जो सन् 1950-51 में 5.1 अरब किलोवॉट था। सन् 2005-06 में बढ़कर 623.2 अरब किलोवाट हो गया। योजना काल में देश में विद्युत उत्पादन में वृद्धि के साथ-साथ उपयोग में भी वृद्धि हुई । 1950-51 में प्रतिव्यक्ति विद्युत खपत 2.4 किलोवाट थी, जो वर्तमान में बढ़कर 83.6 किलोवाट हो गई। इसी प्रकार मार्च 2005 के अन्त तक देश के 85 प्रतिशत गाँवों का विद्युतीकरण किया जा चुका था।

6. परिवहन एवं संचार क्षेत्र में वृद्धि - योजना काल में परिवहन एवं संचार साधनों में काफी प्रगति हुई। 1950-51 में देश में 53.6 हजार किलोमीटर रेलमार्ग था जो सन् 2005-06 में बढ़कर 63.3 हजार किलोमीटर हो गया। इसी प्रकार सन् 1950-51 में सड़कों की कुल लम्बाई 4.00 लाख किलोमीटर थी जबकि आज इसकी लम्बाई 33.2 लाख किलोमीटर हो गई है। इसी प्रकार जल परिवहन एवं वायु परिवहन के क्षेत्र में तेजी से विस्तार हुआ है। जहाँ तक संचार क्षेत्र का प्रश्न है 1950-51 में देश में कुल 36,000 डाकघर थे, जिनकी संख्या आज बढ़कर 1,55,516 हो गयी है।

7. शिक्षा और स्वास्थ्य - योजनाओं के प्रारम्भ होने के समय देश में 27 विश्वविद्यालय थे, लेकिन आज इनकी संख्या 389 है। 1950-51 में देश की साक्षरता दर 16.6 प्रतिशत थी जो 2001 में बढ़कर 64.8 प्रतिशत हो गयी। इसी प्रकार देश में प्राथमिक स्कूलों की संख्या 1950-51 में 2.3 लाख थी जो आज बढ़कर 7.10 लाख से अधिक हो गयी है। 1950-51 में 6 से 11 वर्ष तक उम्र के 42.6 प्रतिशत बच्चे स्कूल जाते थे, लेकिन आज यह प्रतिशत बढ़कर 98.31 हो गया है। 1950-51 में 11 से 14 वर्ष की उम्र के 12.7 प्रतिशत बच्चे पढ़ने जाते थे जिनका प्रतिशत आज बढ़कर 62.49 हो गया है। 1950-51 में 578 स्नातक तथा स्नातकोत्तर महाविद्यालय थे लेकिन आज इनकी संख्या 46,796 है।

देश की स्वास्थ्य सेवाओं में भी योजना अवधि में विशेष प्रगति हुई। 1950-51 में अस्पतालों की कुल संख्या 9209 हजार थी जो कि बढ़कर वर्ष 2005 में 27,770 लाख हो गयी। इसी प्रकार देश में पंजीकृत डॉक्टरों की संख्या 1950-51 में 61.8 हजार थी जो बढ़कर वर्ष 2005 में 6.56 लाख हो गई है। स्वास्थ्य सेवाओं में वृद्धि के परिणामस्वरुप औसत जीवन काल जो 1950-51 में 32.1 वर्ष था 2006 में बढ़कर 65.4 वर्ष हो गया है।

8. बैंकिंग क्षेत्र में उन्नति - नियोजन काल में देश में बैंकिंग सेवा का काफी विस्तार हुआ। दिसम्बर 1951 में देश में वाणिज्य बैंकों की शाखाओं की संख्या 2,647 थी, जो 30 जून 2006 के अन्त में बढ़कर 69,616 हो गई।

9. निर्यात एवं आयात में वृद्धि - नियोजन काल में देश के आयात और निर्यात में महत्वपूर्ण वृद्धि हुई है। 1950-51 में आयात एवं निर्यात क्रमश: 608 व 606 करोड़ रूपये के थे जो 2005-06 में बढ़कर क्रमश: 6,60,409 व 4,56,418 करोड़ रूपये के हो गये।

भारत में आर्थिक नियोजन की असफलताएँ

आर्थिक नियोजन के फलस्वरुप देश ने विभिन्न क्षेत्रों में महत्वपूर्ण उपलब्धियाँ प्राप्त की हैं। लेकिन इन सब उपलब्धियों के बावजूद योजनाओं में निर्धारित लक्ष्य प्राप्त नहीं किये जा सके। इसलिए अनेक अर्थशास्त्रियों का मानना है कि भारत में नियोजन असफल रहा है। भारत में नियोजन की असफलताओं को निम्न प्रकार से समझा जा सकता है -

1. **प्रतिव्यक्ति आय में धीमी प्रगति** – भारत में आर्थिक नियोजन के बाद भी प्रतिव्यक्ति आय में वृद्धि बहुत ही धीमी गति से हुई है। भारत में लगभग 21 प्रतिशत जनसंख्या अभी भी गरीबी की रेखा के नीचे जीवन यापन कर रही है।

2. **क्षेत्रीय असन्तुलन** – नियोजन के फलस्वरूप देश में क्षेत्रीय असन्तुलन कम होना चाहिए था। लेकिन उसमें कोई विशेष परिवर्तन नहीं हुआ है। आज भी उत्तरप्रदेश, उड़ीसा तथा बिहार आदि राज्य पिछड़े हुए हैं, जबकि महाराष्ट्र, तमिलनाडु, पश्चिम बंगाल, पंजाब, हरियाणा आदि राज्य तुलनात्मक रूप से विकसित श्रेणी में हैं।

3. **मूल्य वृद्धि** – नियोजन अवधि में मूल्यों में निरन्तर वृद्धि होती जा रही है। थोक मूल्य सूचकांक 1993–94 के आधार पर बढ़कर दिसम्बर 2006 में 207.9 हो गया। अनुमान है कि नियोजन अवधि में कीमतों में लगभग 27 गुनी से अधिक की वृद्धि हुई है।

4. **बेरोजगारी में वृद्धि** – आर्थिक नियोजन का एक महत्वपूर्ण उद्देश्य बेरोजगारी में कमी करना था। लेकिन हर योजना के अन्त में बेरोजगारी बढ़ती ही गयी। जहाँ प्रथम योजना के प्रारम्भ में 33 लाख व्यक्ति बेरोजगार थे। वहीं वर्तमान में लगभग 4 करोड़ व्यक्तियों के बेरोजगार होने का अनुमान है।

5. **आय व धन की असमानता में वृद्धि** – आर्थिक नियोजन का एक महत्वपूर्ण उद्देश्य धन के केन्द्रीयकरण को समाप्त कर आर्थिक समानता को बढ़ाना रहा, लेकिन नियोजन के बावजूद धनी व्यक्ति अधिक धनी व गरीब और अधिक गरीब होता गया है।

6. **सार्वजनिक उद्यमों की असफलता** – देश में सार्वजनिक क्षेत्र में उद्यमों की संख्या 242 है। इनमें से अनेक उपक्रम हानि में चल रहे हैं। अत: सार्वजनिक उद्यम आशा के अनुरुप परिणाम देने में असमर्थ रहे हैं।

इस प्रकार यद्यपि पंचवर्षीय योजनाओं के फलस्वरुप कृषि उत्पादन, औद्योगिक उत्पादन और प्रतिव्यक्ति आय में पर्याप्त वृद्धि हुई है तथा गरीबों के प्रतिशत में भी कमी आई है। लेकिन दूसरी और अर्थव्यवस्था निर्धनता, बेरोजगारी तथा क्षेत्रीय असन्तुलन आदि से जकड़ी हुई है। अत: अगली योजनाओं में इन समस्याओं के समाधान करने की दिशा में ठोस प्रयास करने की आवश्यकता है।

15.7 इंडिया विजन – 2020

भारतीय योजना आयोग ने जनवरी 2003 में इंडिया विजन – 2020 के नाम से एक महत्वपूर्ण दस्तावेज जारी किया है। इस दस्तावेज के अनुसार भारत सन् 2020 तक विकसित देशों की श्रेणी में सम्मिलित हो जायेगा। फलत: देश से बेरोजगारी, गरीबी, निरक्षरता पूर्णत: दूर हो जायेगी। योजना आयोग का अनुमान है कि सन् 2020 तक देश की 135 करोड़ जनसंख्या बेहतर पोषित, अच्छे रहन–सहन के स्तर वाली, पूर्णत: स्वस्थ तथा अधिक औसत आयु वाली होगी।

आर्थिक कल्याण – आर्थिक कल्याण, सामाजिक कल्याण का वह भाग है, जिसे मुद्रा के मापदण्ड से प्रत्यक्ष रूप से मापा जा सके।

वणिकवाद – वणिकवाद से आशय उस आर्थिक विचारधारा से है जो सोने एवं चाँदी की प्राप्ति को विकास का आधार मानते है। 16वीं शताब्दी से लेकर 18वीं शताब्दी के मध्य तक यूरोप के देशों में लोकप्रिय रही।

राष्ट्रीय आय – किसी देश के श्रम एवं पूँजी देश के प्राकृतिक साधनों के साथ मिलकर एक वर्ष में जिन वस्तुओं और सेवाओं का शुद्ध वास्तविक उत्पादन करते हैं, के मौद्रिक मूल्य को राष्ट्रीय आय कहा जाता है।

प्रतिव्यक्ति आय – कुल राष्ट्रीय आय में कुल जनसंख्या का भाग देने पर प्राप्त भागफल को प्रतिव्यक्ति आय कहा जाता है।

जीवन प्रत्याशा – व्यक्ति के जीवित रहने की औसत आयु ।

नियोजन – एक निश्चित अवधि में देश में उपलब्ध संसाधनों के द्वारा निर्धारित लक्ष्यों को प्राप्त करने की प्रक्रिया को नियोजन कहा जाता है।

शिशु मृत्यु दर – एक वर्ष की आयु से पहले हुई मृत्यु, शिशु मृत्यु दर कहलाती है। शिशु मृत्यु दर प्रतिवर्ष प्रति हजार जीवित जन्में शिशुओं में से मृत शिशुओं की संख्या है।

क्षेत्रीय असंतुलन – जब कुछ क्षेत्रों में उद्योग-धन्धों का केन्द्रीकरण हो जाता है तथा अन्य क्षेत्र पिछड़े रह जाते हैं, तो उसे क्षेत्रीय असंतुलन कहा जाता है।

थोक मूल्य – वस्तुओं के थोक बाजार में पाए जाने वाले मूल्य को थोक मूल्य कहा जाता है।

सार्वजनिक क्षेत्र – जिन उद्योग-धंधों का स्वामित्व सरकार के हाथ में होता है, उन्हें सार्वजनिक क्षेत्र के उद्योग कहा जाता है।

मानव विकास संकेतक– विभिन्न देशों के विकास स्तर को मापने के लिए जो मापदण्ड संयुक्त राष्ट्र द्वारा अपनाया गया है, उसे मानव विकास संकेतक कहा जाता है।

विनियोग – उत्पादक कार्यों में पूँजी लगाने को विनियोग कहा जाता है।

अभ्यास

सही विकल्प चुनिए -

1. आर्थिक विकास का परिणाम है –

   (ii) जीवन स्तर में सुधार (ii) आर्थिक कल्याण में वृद्धि

   (iii) जीवन प्रत्याशा में वृद्धि (iv) उपरोक्त सभी

2. देश की प्रतिव्यक्ति आय की गणना किस आधार पर की जाती है –

   (i) उस देश की जनसंख्या से (iii) विश्व की जनसंख्या से

   (iii) राज्यों की जनसंख्या से (iv) अन्य देश की जनसंख्या से

3. प्रो. अमर्त्य सेन ने विकास का आधार माना है –

   (i) सम्पन्नता (ii) आत्मनिर्भरता

   (iii) जन-कल्याण (iv) विदेशी व्यापार

4. विकसित देशों में प्राकृतिक संसाधनों का उपयोग होता है –

   (i) अतिअल्प (ii) बिल्कुल नहीं

   (iii) थोड़ा बहुत (iv) बहुत अधिक

5. भारत में अब तक पूर्ण हुई पंचवर्षीय योजनाएँ हैं –

(i) 5 (ii) 10

(iii) 15 (iv) 11

रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए –

1. आर्थिक विकास से जनता के ..... स्तर में वृद्धि होती है।
2. इंडिया विजन – 2020 का प्रकाशन वर्ष ..... में हुआ था।
3. जीवन की भौतिक गुणवत्ता सूचक का निर्माण ..... ने किया है।
4. विश्व बैंक के अनुसार विकसित देश वह है जिसकी प्रतिव्यक्ति आय ..... रु. प्रति वर्ष या उससे अधिक है।
5. दसवीं योजना का कार्यकाल ..... से ..... तक था।

अति लघु उत्तरीय प्रश्न

1. वणिकवाद के अनुसार आर्थिक विकास का क्या अर्थ है? लिखिए।
2. राष्ट्रीय आय की गणना किस समय अवधि में की जाती है? लिखिए
3. मानव विकास सूचकांक की गणना किसके आधार पर की जाती है? लिखिए।
4. विश्व बैंक के अनुसार विकसित देशों की प्रतिव्यक्ति आय कितनी होनी चाहिए लिखिए।
5. आर्थिक विकास की माप के प्रमुख मापदण्ड कौन–कौन से हैं? लिखिए।

लघुत्तरीय प्रश्न

1. राष्ट्रीय आय क्या है व इसे कैसे ज्ञात की जाती है? लिखिए।
2. प्रतिव्यक्ति आय क्या है? व इसकी गणना का सूत्र लिखिए।
3. मानव विकास के संकेतक बनाने का मुख्य उद्देश्य लिखिए।
4. भारत के विकसित एवं विकासशील राज्य कौन–कौन से हैं? लिखिए।
5. इंडिया विजन – 2020 क्या है? लिखिए।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. आर्थिक विकास की प्राचीन एवं नवीन अवधारणा को समझाइए।
2. मानव विकास संकेतक का अर्थ बताते हुए इसके घटकों की व्याख्या कीजिए।
3. विकसित एवं विकासशील अर्थव्यवस्था में अन्तर बताइए।
4. आर्थिक नियोजन का अर्थ बताते हुए भारत में नियोजन के प्रमुख उद्देश्य बताइए।
5. भारत के नियोजन की सफलताएँ एवं असफलताएँ लिखिए।